B. A. History Hon's Part-II
Paper: III, Unit: III, Date: 30.9.2020 Lecture No. 32

Lession: बहमनी साम्राज्य की उत्पत्ति

मुहम्मद तुगलक के शासन-काल में ही तुगलक राज्य का छिन्न-भिन्न होने लग था। साम्राज्य में जगह-जगह पर विद्रोह उभरने लगे थे। प्रान्तीय गवर्नर भी स्वतं हो गये थे। दक्षिण में निवास करने वाले विदेशी अमीरों तथा सरदारों ने इस्मा मकख के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया था। इस्माईल मकख को राजा बना दिया गया तथा दौलतबाद को राजधानी घोषित कर दिया गया। इस्माईल मकख ने हसन जफर नाम के व्यक्ति को अपना उत्तराधिकारी बनाया।

बहमनी नाम क्यों पड़ा: हसन ने अपने राज्य का नाम बहमनी रखा था। यह एक विवादग्रस्त प्रश्न था। वीर सेनानी हसन फारस के बहमन शाह का सम्बन्धी था जिसके नाम से बहमनी वंश नाम पड़ा। उसने अलाउद्दीन हसन बहमन शाह की उपाधि धारण की तथा गुलबर्गा को अपनी राजधानी बनाया। उसने अपने राज्य को जाग में बाँट दिया था तथा प्रत्येक अमीर को जागीर दी थी। उन लोगों ने भी वचन दिया था कि अवसर आने पर वे सुल्तान को सैनिक सहायता प्रदान करेंगे।

फरिश्ता का मत: फरिश्ता का मत है हसन दिल्ली के गंग नामक ज्योतिषी के य था। यह ब्राह्मण मुहम्मद तुगलक का कृपापात्र था। एक बार हसन को स्वामी के खेत जोतते हुए स्वर्ण मुद्राओं का कलश मिला हसन ने स्वामी को दे दिया। ब्राह्मण ने प्रसन्न होकर उसे सरकारी नौकरी दिलवा दी। यह भी कहा जाता है ब्राह्मण हसन के सुल्तान होने की भविष्यवाणी की थी और प्रार्थना की थी कि रा होने पर वह उसे प्रधानमंत्री बना ले। हसन ने उसे प्रधानमंत्री बनाया था। उसे सुल्तान होने पर अपना नाम 'ब्रह्मणी' या बहमनी रखा था।

अन्य मत: दूसरा मत के विचारकों का कथन है बुरहाने मआसीर के अनुसार अप वंश के कारण सुल्तान बहमन कहा जाता था। सिक्कों तथा लेखों से इस बात पुष्टि नहीं होती, कि उसने अपने राज्य का नाम ब्राह्मणी रखा था। सिमा का है कि हसन क्रूर तथा धर्मान्ध, मुसलमान था और इस स्थिति में वह अपने को ब्रा नहीं कह सकता था। हसन फारस के बादशाह बहमन किफ इस्फन्दियार का वंशज थ उसी के नाम पर इस वंश का नाम पड़ा। बहमनी राज्य पर चौदह सुल्तानों ने राज किया। इसका संस्थापक हसन जफर माना जाता है जिसकी मृत्यु 1359 ई० में हो ग 1463 ई० में निजामशाही की मृत्यु के बाद उसके छोटे भाई मुहम्मदशाह तृतीय को बहमनी साम्राज्य की गद्दी मिली। किन्तु वास्तविक शक्ति उसके मंत्री महमूद ग के हाथ में थी। वह विदेशी था किन्तु काफी योग्य था। किन्तु विजयनगर से मिल मगत का दोष लगाकर मुहम्मदशाह ने उसे मरवा दिया। ग्वाँ की मौत से बहमन साम्राज्य की एकता और शक्ति क्षीण होने लगी और 1526 ई० तक बहमनी रा का अंत हो गया।

राजाओं की विलासिता, आन्तरिक दुर्बलताओं, गुटबन्दी, अन्य राज्य से युद्ध इत्यादि इसके पतन के मुख्य कारण थे।

राज्य में विभिन्न वर्गों तथा सम्प्रदायों की उन्नति: बहमनी राज्य में भिन्न-भि वर्ग तथा सम्प्रदाय पैदा हो गये थे। दरबार में अमीरों के बीच दो दल हो गये इनमें एक दल विदेशी अमीरों तथा दूसरी स्थानीय अमीरों का था। इन दलों में संघर्ष चलता रहता था। अफगानों तथा तुर्कों में भी भेद-भाव चलता रहता था। तुर्क से

मुगलों को घृणित दृष्टि से देखते थे। अबीसीनिया के लोग भी अरबों से घृणा करते थे। भारतीय मुसलमान विदेशी मुसलमानों के प्रति ईर्ष्यालु थे। विभिन्न वर्गों तथा सम्प्रदायों में भेद-भाव के कारण शासन-व्यवस्था बिगड़ने लगी।

·· महमूद खाँ की हत्या। कुछ लोग मुहम्मद खाँ के उत्तम शासन प्रबन्ध तथा कार्यों को देख उससे ईर्ष्या करने लगे थे। महमूद खाँ की हत्या से साम्राज्य पर बहुत बड़ा आघात हुआ। वह एक कुशल राजनीतिज्ञ था। इस योग्य मंत्री के बिना राज्य छिन-भिन्न हो गया। प्रांतीय गवर्नर भी विद्रोह करने लगे।

·· महमूदशाह का दुरभिसंधि का जीवन भ्रष्ट तथा विलासी था। वह आलसी भी था। उसके दरबार में चापलूसों का जमघट रहता था। वह शराब पीकर लज्जारहित होकर सराय में घूमता था। इसके कर्मचारियों तथा प्रजा पर विपरीत प्रभाव पड़ता था। बरार के गवर्नर इमादुलमुल्क ने विद्रोह आरंभ कर दिया। इसके बाद अन्य राज्य भी विद्रोह करने लगे।

:· अमीर बरीद का प्रभाव: बहमनी राज्य के पतन का एक कारण महमूदशाह का मंत्री बरीद था। 1478 ई० में अहमदशाह की मृत्यु के बाद कई शासक बने पर उनसभी की वास्तविक शक्ति मंत्री अमीर बरीद के हाथ में आ गई थी वह सुल्तान कलीम उल्लाह का अन्त करके स्वयं सुल्तान बन गया था। वह स्वेच्छापूर्वक राज्य संचालन करता था।

:: विजयनगर से लगातार युद्ध: विजय नगर साम्राज्य से बराबर युद्ध चला करता था। उस समय दक्षिण में दो बड़े राज्य थे। एक हिन्दुओं का तथा दूसरा मुसलमानों का। ये राज्य आपस में लड़ा करते थे। युद्ध में लगे शासक जनता की ओर से विमुख रहे। शासन में कोई स्थायी सुधार नहीं हुआ। निरन्तर युद्धों से साम्राज्य का पतन अवश्यम्भावी हो गया।

:: हिन्दुओं का विरोध: हिन्दु दक्षिण में अपना राज्य चाहते थे। मुसलमानों के अत्याचारों से हिन्दु परेशान थे। मुसलमानों में धार्मिक असहिष्णुता थी। मंदिरों को गिराते तथा अनेक अत्याचार करते थे। हिन्दुओं ने सदैव मुस्लिम शासकों का विरोध किया, परिणामतः बहमनी राज्य का पतन सामने आया।

हम यह कह सकते हैं कि बहमनी राज्य में सामाजिक, आर्थिक धार्मिक का साम्राज्य ठीक नहीं था, उसके प्रति मुहम्मद तुगलक का शासन काल युद्ध-दुरास्थ नहीं था, जिसके कारण सामाजिक, प्रजा एवं शासन काल अस्त व्यस्त था।

[] डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कालेज, जयनगर